12 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

वर दाता बाप द्वारा मिले सर्व खजानों की अनुभूति

➢➢ संगम युग में संपन्न स्थिति का अनुभव

➳ _ ➳ मैं चैतन्य ऊर्जा इस सर्वश्रेष्ठ संगम युग में हूं

→ इस श्रेष्ठ युग में मैं श्रेष्ठ आत्मा सर्व खजानो से संपन्न हूं

→ सर्व युगों से छोटे इस पुरुषोत्तम संगम युग में मैं आत्मा सारे कल्प की कमाई करती हूं

→ परमात्मा ने पिता बन मुझे सर्व खजानों से संपन्न बना दिया है

- मैं तृप्त आत्मा सदा बाप और वरसे की याद में रहती हूं
- और प्राप्त एक एक खजाने को स्मृति में लाती हूं
- इन सर्व खजानों को स्मृति में लाती मैं आत्मा स्वयं को तृप्त अनुभव कर रही हूं

➢➢ सबसे बड़े खुशी के खजाने की अनुभूति

➳ _ ➳ मैं आत्मा स्वयं से बात करती अपनी खुशी के खजाने को स्मृति में लाती हूं

→ इस सर्वश्रेष्ठ जीवन में हर रोज प्रातः उठते ही पिता परमात्मा से मेरी मुलाकात होती है

→ सर्व वरदानो के दाता सर्वशक्तिवान बीज से मुझ आत्मा का मिलन होता है

→ एक और भक्त आत्माएं उसके दर्शन की प्यासी है

→ और मैं भाग्यवान आत्मा उस परमात्मा से सर्व संबंधों का रस अनुभव करती हूं

- मैं आत्मा विश्व के रचयिता की संतान हूं उसके वरसे की अधिकारी हूं
- यह सबसे बड़ी से बड़ी खुशी मेरे भाग्य में है
- सदा इसी खुशी के झूले में मैं आत्मा झूलती रहती हूं
- मैं परमात्मा का सिकीलधा लाडला बच्चा हूं

➢➢ कर्म करते सर्व संबंधों से बाप के साथ का अनुभव

➳ _ ➳ स्वयं को साक्षी हो देखती हूं

→ कर्म योग का पाट बजाते मैं आत्मा हर करम बाबा के साथ कर रही हूं

→ परमात्मा पिता बन मुझे समझा रहे हैं

→ तो कभी युगल बन मेरा साथ निभा रहे हैं

→ भोजन बनाते, खाते समय, उठते- बैठते हर समय मैं बाप दादा के साथ हूं

- हर कर्म का सारा बोझ मैं बाबा को दे हलके पन का अनुभव कर रही हूं
- हर मुश्किल सहज होती जा रही हैं
- मैं बाबा के साथ कंबाइंड युगल रूप का अनुभव कर रही हूं

➢➢ रात्रि समय सारे दिन के समाचार की लेन-देन की अनुभूति

➳ _ ➳ मैं आत्मा दिन भर कर्म योग की स्थिति में रह रात्रि को बाबा के कमरे में बाबा से रूह रिहान कर रही हूं

→ मैं आत्मा बाबा को दिन भर में हुए हर कार्य का समाचार देती हूं

→ धन का पोतामेल संकल्पों का भी पोता मेल बाबा के सामने रखती हूं

- हर बात हर परिस्थिति सब कुछ बाबा को सौप बुद्धि को खाली करती जा रही है
- बाप दादा की प्यार भरी गोदी में एक छोटे बच्चे के समान निश्चिंत हो सो रही हूं